गुरु उपदेश

१—राधास्वामी कुल मालिक का नाम है । यही सच्चा और निज नाम है ।

२—कुल मालिक शब्द स्वरूप, प्रेम स्वरूप, आनन्द स्वरूप और हर्ष स्वरूप है ।

३—कुल मालिक सर्व व्यापक है और एक देशी भी है ।

४—कुल मालिक ने जीवों पर अति दया करके परम संत सतगुरु रूप धरा और जीवों के उद्धार के निमित्त संसार में आये ।

५—कुल मालिक की दया सब पर है पर उन पर विशेष है जो उसकी सरन में आ गये हैं और हरदम उसकी याद रखते हैं और वेही उसके निज प्यारे हैं ।

६—कुल मालिक का दर्शन जब हो अन्तर ही में होगा ।

७—'मैं' और 'तू' सुरत है और सुरत कुल मालिक की अंश है जैसे सूरज और उसकी किरन ।

८—अंश अंशी के संग सदा आनन्द में रहती है ।

९—यह आनन्द संसार में नहीं है सिर्फ़ कुल मालिक के चरनों में मिल सकता है ।

१०—जो सुरत संसार से हटकर कुल मालिक के

चरनों में पहुंचे तो सदा को आनन्द में हो जाय।

११—सो यह हटना और सच्चा आनन्द पाना सुरत शब्द योग से होगा।

१२—सुरत से अन्तर में शब्द को सुनना सुरत शब्दयोग है।

१३—शब्द के बराबर रास्ता दिखाने वाला और अँधेरे में उजाला करने वाला और कोई नहीं है और सब रचना का काम शब्द से हो रहा है।

१४—शब्द हरदम हर एक के निज घट में हो रहा है। इस शब्द को ध्वन्यात्मक नाम कहते हैं। सुरत इस शब्द को सुनती हुई निज देश में पहुंच सकती है।

१५—सुरत शब्द मारग का भेद संत सतगुरु या साधगुरु या उनके सच्चे प्रेमी सतसंगी से मालूम हो सकता है।

१६—संत सतगुरु वे हैं जिन्हों ने अपनी सुरत को सुरत शब्द योग का अभ्यास करके मालिक कुल के धाम में यानी सत्तलोक और राधास्वामी धाम में पहुंचाया है ऐसे सतगुरु कुल मालिक के ख़ास पुत्र और निज प्यारे हैं।

१७—साध गुरू वे हैं जिन्हों ने अपनी सुरत को शब्द योग अभ्यास से त्रिकुटी के परे पारब्रह्म पद यानी सन्तों के दसवें द्वार में पहुंचाया है और आगे चलने का अभ्यास कर रहे हैं।

१८—सतसंगी वे हैं जो सुरत शब्द योग के अभ्यास से मालिक के चरनों में पहुंचने की कोशिश करते हैं और संत सतगुरु की दया लेकर निज धाम में पहुंचनहार हैं।

१९—संत सतगुरु अपने वक्त का मिलना चाहिये पिछलों की टेक से कारज नहीं होगा।

२०—संत सतगुरु की दया और मेहर और सुरत शब्द योग की कमाई से मालिक का दर्शन हो सक्ता है।

२१—संत सतगुरु से सच्ची प्रीत करनी चाहिये और उनको सतसंग अन्तरी और बाहरी तन मन धन से सेवा करके प्रसन्न करना चाहिये।

२२—संत सतगुरु की सेवा कुल मालिक की सेवा है और मालिक इसी सेवा से राज़ी है और किसी की सेवा से काम नहीं बनेगा।

२३—कुल मालिक और संत सतगुरु का भरोसा रखना चाहिये और जहाँ तक हो सके उनके हुक्म और मौज के अनुसार बरतना चाहिये।

२४—संत सतगुरु की मौज मालिक की मौज है याने मालिक की मौज में और संत सतगुरु की मौज में कोई फ़रक़ नहीं है।

२५—संत सतगुरु अपने अपनाये हुए सतसंगियों के हमेशा अंग संग और साथ हैं और उनकी पल पल हर तरह से रक्षा करते हैं।

२६—सतगुरु का जिसने सच्चे मन से दामन पकड़ लिया है और उनके चरनों में सच्ची और गहरी प्रीत और परतीत रखता है वही अपनाया हुआ है। उससे काल डरता है, दूर से ही लुभाता है और डराता है पास आने की उसे हिम्मत नहीं है।

२७—जहाँ सच्चे मालिक की महिमा और उसके चरनों में प्रेम प्रीत बढ़ाने की और सुरत शब्द मारग के भेद की चर्चा हमेशा होती है सच्चा सतसंग है।

२८—सतसंग की महिमा अपार है इसे सच्चे मन से चेतकर करना चाहिये।

२९—सतसंग पारस है इसमें जो आवेगा कंचन हो जावेगा।

३०—सतसंग से करम भरम दूर होते हैं बिना इनके दूर हुए अभ्यास नहीं बनेगा और सच्चा उद्धार नहीं होगा।

३१—निःकरम होना चाहिये इसलिये तन मन धन और उसके सुखों को सतगुरु के अरपन कर देना चाहिये अगर नहीं किये जावेंगे तो दिन २ करम चढ़ते जावेंगे और संसार में आशक्ति बढ़ती जावेगी और उसी क़दर उद्धार मुशकिल हो जावेगा।

३२—जो कुछ काम करे उसके फल को सतगुरु की मौज पर छोड़ देना चाहिये और जिस तरह वे रक्खें उसी में ख़ुश रहे और शिकायत न करे इस तरह भी निःकर्म हो सकता है।

३३—काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्षा, बिरोध, मान

और बड़ाई मन के बिकार हैं और मन इन्हीं में बरतना चाहता है।

३४—यह सब भजन और सेवा में बिघन करते हैं। इसलिये जहाँ तक हो सके इनसे बचता रहे और मन की घातों से होशियार रहे तो इन बिकारों से बच सकता है।

३५—मन इन्द्रियों के द्वारा कर्म करता है और सुरत को उनके फल के भोगने के लिये देह और संसार में बाँधे रखता है।

३६—मन का संसार के पदार्थों में असली बंधन है और उनके छोड़ने में दुखित होता है और जितना ज़ियादा बंधन होगा उतना ही बियोग से ज़ियादा दुख होगा।

३७—मन के बिकारों को दूर करना चाहिये बिना इनके दूर किये सतगुरु और कुल मालिक का पूरा निश्चय नहीं होगा और इसलिये पूरा और सच्चा उद्धार नहीं होगा लेकिन बिना मेहर सतगुरु के और सुरत शब्द की कमाई के यह बिकार दूर नहीं होंगे।

३८-सतसंग अन्तरी यानी सुरत से ध्वन्यात्मक नाम को निज घट में सुनना, और सतसंग बाहरी यानी सतगुरु संग और उनकी बानी का समझ करके पाठ, मन की गढ़न और सफ़ाई के लिये ज़रूरी हैं।

३९—संसारी पदार्थ नाशमान हैं और उनका सुख स्वतंत्र और ठहराऊ और पूरी शांति देने वाला नहीं

है। इस लिये इन में कारज मात्र बरतना चाहिये, सच्ची प्रीत सतगुरु से होनी चाहिये।

४०—संसारी जीवों को मरते वक्त बड़ी तकलीफ़ होती है क्योंकि जिन पदार्थों में इनका प्यार रहता है छोड़ने पड़ते हैं लेकिन इनका कुछ बल पेश नहीं जाता है।

४१—इसलिये जीते जी मरना चाहिये याने सुरत को नेत्रों के स्थान से हटा कर मालिक सच्चे के चरणों में लगाना और निज देश में पहुंचाना चाहिये।

४२—सुरत जब नेत्रों के स्थान पर आती है संसार और देह से इसका इलाक़ा पैदा होता है।

४३—मनुष्य बिशेष कर कान और आँख इन्द्रियों के द्वारे संसार में फँसा है और मन तक इन इन्द्रियों के बिशेष कर आधीन है।

४४—भक्ती करके इनके आनन्द अंतर में प्राप्त होंगे और वे सुख ऐसे होंगे जिन से सच्चे मालिक के चरणों में प्रेम प्रीत दिन २ बढ़ेगी।

४५—यह आनन्द हमेशा एक से भी नहीं रहेंगे और अगर रहें तो वे सुख पच जायँगे और भक्ती ढीली होती जायगी और सच्चे मालिक का प्रेम कम हो जायगा और आयन्दा तरक्की बन्द हो जायगी।

४६—और यह आनन्द मरने के वक्त भी नष्ट नहीं होंगे अगर नष्ट हो गये तो संसारी बासना मन में आ-

जायगी और संसार मैं जनमना पड़ेगा और चौरासी नहीं छूटेगी ।

४७—सो इन दोनों बातों की सम्हाल संत मत मैं है यानी सुरत शब्द अभ्यासी को दिन दिन आनन्द बढ़ता जावेगा और मरने के वक्त बिशेष आनन्द प्राप्त होगा ।

४८—भक्ती अन्तरमुख होना इसलिये ज़रूरी है और अगर बाहरमुख हो तो संत सतगुरु की होनी चाहिये और किसी की बाहर मुख भक्ती निष्फल है ।

४९—गुरुमुख होना चाहिये यानी गुरू की आज्ञा मैं बरतना चाहिये । मनमुख होने से चौरासी जाना पड़ेगा।

५०—सच्चे मालिक और संत सतगुरु का प्यार और खौफ़ मन मैं रहना और दिन दिन बढ़ना चाहिये ।

५१—हर वक्त ऐसे काम जिन से सच्चे मालिक और संत सतगुरु का शौक़ और उनके चरणों मैं प्रीत और प्रतीत बढ़े जहाँ तक हो सके करने को तइयार रहे और जिन कामों से ये कम हों जहाँ तक हो सके नहीं करने चाहियें ।

५२—दिन भर मैं कम से कम दो घंटे मालिक की बन्दगी और भजन सुमिरन वग़ैरह मैं सर्फ़ करे और जब २ मौक़ा मिले वक्त बढ़ाते जाना चाहिये और जब जब संत सतगुरु का संग मिले चेत कर करना चाहिये ।

५३—सच्चे मालिक या संत सतगुरु से संसार मैं बढ़-

तो के लिये प्रार्थना नहीं करनी चाहिये वे जीव की ज़रूरतों को जानते हैं और जैसा मुनासिब समझते हैं उसे आपही बख़शिश करते हैं जो मन किसी हालत में न माने तो वक्त भजन के अपनी चाह ज़ाहिर करदे और उसके फल की प्राप्ती उनकी मौज पर छोड़ दे और जतन करता रहे।

५४—मालिक सच्चे से और संत सतगुरु से उनके चरणों में सच्ची प्रीत और परतीत को जब तब माँगना चाहिये पर जल्दी और हठ नहीं करनी चाहिये क्योंकि चाह के पूरे न होने से मन अभाव लावेगा और बेपरतीत हो जावेगा।

५५—नर देही सब से उत्तम है इसी देह में मालिक की भक्ती हो सकती है इस लिये ऐसे कर्म नहीं करने चाहियें कि नर देही छूट जावे और चौरासी में जाना पड़े।

५६—भक्ती करने के लिये सच्चा नाम, धाम, रूप और लीला नामी की मालूम होनी चाहिये तब ध्यान दुरुस्ती से बन पड़ेगा।

५७—कृत्रिम या सिफ़ाती नाम से पूरा उद्धार नहीं होगा इसके लिये निज नाम का भेद मालूम होना चाहिये निज नाम की धुन हरदम निज घट में हो रही है और सुरत शब्द योग के अभ्यास से सुनाई दे सकती है।

५८—संसारी पदार्थों के सुखों से सुरत और मन को संतोष नहीं होता है बल्कि तृष्णा बढ़ती है।

५९—सच्चा सन्तोष जब आवेगा जब सुरत और मन को ऊँचे के देशों के आनन्द प्राप्त होंगे और ज्यों ज्यों ऊँचे स्थान की चढ़ाई होती जावेगी उसी क़दर आनन्द बढ़ता जावेगा और निज देश में पूरा सन्तोष और पूरा आनन्द प्राप्त होवेगा।

६०—संत मत बहुत सहज है यहाँ तक कि इसके अभ्यास को सात बरस का लड़का, जवान और अस्सी बरस का बूढ़ा भी कर सकता है मर्द हो चाहे औरत, और चार लफ़्ज़ों में यह शामिल है, सच्चा गुरू, सच्चा नाम, सच्चा सङ्ग और सच्चा अनुराग।

६१—मांस और कुल नशे की चीज़ों से हर सतसंगी को परहेज़ करना चाहिये।

६२—अपने मतलब के लिये किसी को मन वच कर्म करके न सतावें और न दुख पहुंचावे, किसी से विरोध और ईर्षा न करे और अपने को अंतर में हमेशा दीन रक्खे।

६३—संसार में सचाई से बरते और दिखावे के काम जहाँ तक हो सके नहीं करने चाहियें।

६४—फ़ज़ूल इन्द्रियों के भोगों की चाह न उठावे, मुआफ़िक़ तौर का बरताव दुरुस्त है।

६५—संत मत सब मतों का शिरोमणि है और उनकी जान की जान है यही सच्चे मालिक का सच्चा मत है सच्ची मुक्ति इसी से होगी और कोई मत इसके निमित्त रचा ही नहीं गया॥ समाप्त॥

फ़ह्‌रिस्त राधास्वामी मत के पुस्तकों की

॥ नागरी ॥

	क़ीमत		क़ीमत
सार बचन छन्दबन्द भाग पहिला	... २)	प्रश्नोत्तर संत मत	...।=)
" " " दूसरा	... २)	वचन महात्माओं के	... ।)
सार बचन वार्तिक	...१॥)	जुगत प्रकाश	... ।॥)
प्रेमबानी पहिला भाग	... २)	संत संग्रह भाग पहिला	... ॥)
प्रेमबानी दूसरा "	... २)	संत संग्रह भाग दूसरा	... ॥)
प्रेमबानी तीसरा "	... २)	विनती व प्रार्थना	... ।)
प्रेमबानी चौथा "	... १)	प्रेम प्रकाश	... ।)
प्रेमपत्र पहिला भाग	... ३)	भेद बानी पहिला भाग	... ।-)
प्रेम पत्र दूसरा "	... ३)	भेदबानी तीसरा "	...)॥
प्रेमपत्र तीसरा "	... ३)	भेदबानी चौथा "	... ।-)
प्रेमपत्र चौथा "	... ३)	जीवन चरित्र स्वामी जी महाराज	... ॥)
प्रेम पत्र पाँचवाँ "	... ३)	महाराज सा० के बचन पहिला भाग	॥)
प्रेमपत्र छठा "	... २)	" " दूसरा "	॥)
सार उपदेश	... ॥)	" " तीसरा "	॥)
निज उपदेश	... ॥)	" " चौथा "	॥)
प्रेम उपदेश	... ॥)	" " पाँचवाँ "	॥)
राधास्वामी मत संदेश	... ॥)	हुज़ूर महाराज का जीवन चरित्र	॥=)
राधास्वामी मत उपदेश	...।=)		
गुरु उपदेश	... -)		

॥ उर्दू ॥

सार बचन नसर	... १)	राधास्वामी मत संदेश	... ॥)
सार उपदेश	... ॥)	केटिकिज़म यानी सवाल व जवाब	... ।=)
निज उपदेश	... ॥)	सहज उपदेश	... ।=)

॥ बँगला ॥

सार उपदेश	... ॥)	राधास्वामी मत संदेश	... ॥)

॥ अंग्रेज़ी ॥

[illegible] मत प्रकाश	...॥=)	सोलेस	... ॥)
[illegible]	...२॥)		

पता—

राधास्वामी सतसंग

इलाहाबाद